प्रतिबिम्ब

A Monthly E-Newsletter of Rana Pratap PG College Sultanpur

वर्ष . 01 अंक . 06 मई 2024

RANA PRATAP POST GRADUATE COLLEGE SULTANPUR
CIVIL LINES-1, SULTANPUR-228001 (U.P.)
(Affiliated : Dr. Ram Manohar Lohiya Avadh University, Ayodhya)
www.rppgcollege.ac.in

संरक्षक

एडवोकेट संजय सिंह (अध्यक्ष)

एडवोकेट बालचंद्र सिंह (प्रबंधक)

प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी (प्राचार्य)

प्रधान सम्पादक

ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह 'रवि'
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी

सह सम्पादक

डॉ महमूद आलम
विभागाध्यक्ष उर्दू

डॉमंजू ठाकुर.
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति

प्रमोद श्रीवास्तव
प्रभारी कम्प्यूटर सेंटर

प्रतिनिधि

डॉ संतोष कुमार सिंह(अंश)
शिक्षा संकाय

चौरसिया गोरखनाथ
विज्ञान संकाय

डॉज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह.
कला संकाय

यशस्वी प्रताप सिंह
वाणिज्य संकाय

विद्यार्थी प्रतिनिधि

शिक्षा संकाय
सत्येन्द्र शुक्ल
(बीएड द्वितीय वर्ष)
अंशिका सिंह
(बीएड प्रथम वर्ष)

कला संकाय
रिया श्रीवास्तव
(बीए पंचम सेमेस्टर)
प्रतिमा मिश्र
(बीए प्रथम सेमेस्टर)

विज्ञान संकाय
अनुराग यादव
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
अनुपमा वर्मा
(बीएससी पंचम सेमेस्टर)
लक्ष्मी सिंह
(बीएससी प्रथम सेमेस्टर)

वाणिज्य संकाय
आयुष मिश्रा
(बीकाम तृतीय सेमेस्टर(

रचनायें / विचार/ समाचार / फोटो आदि भेजने का पता -
rppgcollegenewsletter@gmail.com

- लिखित सामग्री यूनीकोड या मंगल फांट में ही टाइप कर के भेजें।लिखित सामग्री फोटो, जेपीजी, पीडीएफ आदि में स्वीकार नहीं की जायेगी।
- News Letter के सम्बन्ध में किसी भी जानकारी / समस्या / सुझाव आदि के लिए अपने संकाय प्रतिनिधि से सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पादकीय

प्रधान सम्पादक

महाविद्यालय में स्नातक और परास्नातक कक्षाओं का पाठ्यक्रम पूरा हो चुका है। सभी परीक्षा की प्रतीक्षा में हैं । ऐसे में तनाव स्वाभाविक है। परीक्षा से डर लगने के पीछे कई कारण होते हैं। जैसे- सामाजिक दबाव, अपेक्षाएं, भविष्य की चिंता, बुरे रिजल्ट का डर, सिलेबस पूरा न कर पाना, खराब हेल्थ, आदि। अक्सर परीक्षा देने से पहले ही उसके रिजल्ट के बारे में सोच कर टेंशन हो जाता है, जिससे दिमाग पढ़ाई में नहीं लग पाता। डर के इन सभी कारणों को कभी अपने मन पर अधिकार न जमाने दें। परीक्षा को लेकर डरने की जरूरत नहीं है। जो विद्यार्थी शांत मन से परीक्षा देता है वह गलती नहीं करता । इसलिए यह ध्यान रखना होगा कि परीक्षा के समय न दबाव में आना है न जल्दबाजी करनी है और न ही अति आत्मविश्वासी बनना है। शांतचित्त होकर परीक्षा की तैयारी करें और परीक्षा केंद्र पहुंच कर शांत मन से परीक्षा दें । इससे परीक्षा बेहतर होगी। विद्यार्थी का प्रमुख काम है पढ़ना । विद्यार्थी जीवन में ध्यान पढ़ाई पर ही केन्द्रित रहना चाहिए । पढ़ाई के अलावा अन्य चीजों पर ज्यादा समय देना प्रगति के मार्ग में बाधक है। परीक्षा के दौरान एकाग्रता आवश्यक है। साथ ही समय पर भोजन और नींद भी जरूरी है जिससे उर्जा बनी रहे और थकान न हो ।घर में तैयारी कर परीक्षा देने जाएं।

परीक्षा केंद्र में घबराने की जरूरत नहीं है। परीक्षा केंद्र पहुंच कर सभी निर्देशों पर ध्यान दें । जो बातें न समझ में आयें उसे वहां मौजूद शिक्षक से पूछ लें। प्रश्नपत्र को आराम से पढ़ें। एक बार प्रश्न समझ न आए तो उसे दुबारा पढ़ें। जो प्रश्न मुश्किल लग रहा है उसे छोड़ अगले को लिखें।आसान प्रश्नों को पहले लिखें और जो मुश्किल लगें उनको बाद में लिखें। एक बार लिखना शुरू कर देंगे तो आत्मविश्वास भी बढ़ने लगेगा।

एक बात हमेशा याद रखें कि जिंदगी में बेहतर अंक नहीं बल्कि बेहतर प्रदर्शन ही आपको सफलता दिलवाएगा। बस अपना प्रदर्शन बेहतर करने का प्रयास करते रहें। कोई दबाव न लें।

आपका अपना --- "इन्दु"

News & Events

समूह चर्चाएँ विद्यार्थी का आत्मविश्वास बढ़ाती है- ज्योति सक्सेना

राणा प्रताप पी जी कॉलेज के अंग्रेजी विभाग में बी ए द्वितीय, चतुर्थ और षष्टम सेमेस्टर के विद्यार्थियों हेतु समूह चर्चा का आयोजन किया गया। अंग्रेज़ी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर ज्योति सक्सेना के निर्देशन में यह चर्चा आयोजित की गयी। उन्होंने बताया कि समूह चर्चा (जीडी) सीखने का एक तरीका है जहां छात्र मुद्दों और विचारों पर एक साथ चर्चा करते हैं।

जीडी में, छात्र समस्याओं को हल करने और एक-दूसरे से सीखने के लिए समूहों में काम करते हैं। यह छात्रों को उनके महत्वपूर्ण सोच कौशल, समस्या सुलझाने की क्षमता और संचार कौशल विकसित करने में मदद करता है। शिक्षा में समूह चर्चाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह शिक्षकों को छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करने का अधिकार देती है।यहाँ बी ए द्वितीय, चतुर्थ और षष्टम सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने अपनी शैक्षिक समस्या, विश्वविद्यालय परीक्षा के हेतु विविध प्रश्नों की जिज्ञासा का समाधान पाया। इस अवसर पर अंग्रेज़ी विभाग के द्वितीय, चतुर्थ और षष्ठम सेमेस्टर के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अपने दृष्टिकोण को तार्किक ढंग से साबित करना चाहिए : प्रो निशा सिंह

अंग्रेजी विभाग में वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय कास्ट बेस रिजर्वेशनरू ड्रीम डेस्ट्रॉयर रखा गया था। इस डिबेट के पक्ष में हरीश कुमार, शिवांगी मिश्रा, राम विशाल पाण्डेय, सृष्टि सिंह ने अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया। डिबेट के विपक्ष में रोहित मिश्रा, अमन सिंह, मनीष मिश्रा, फिरोज अहमद, छवि कसौधन, राम विशाल पाण्डेय, अंकित पाण्डेय, अंकित सिंह ने अपने विचार को प्रस्तुत किया।

अंग्रेजी विभाग अध्यक्ष. प्रोफेसर निशा सिंह ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें वाद विवाद प्रतियोगिताओं में अवश्य प्रतिभाग करना चाहिए क्योंकि इससे हमें गंभीर चिंतन के विषयों पर अपनी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। हमें विषय को अच्छे से समझना चाहिए और विविध पॉइंट्स पर अपने विषय को स्पष्ट करना चाहिए। वाद विवाद में प्रतिभाग करने से ज्ञान में तो वृद्धि होती ही है साथ ही हमारा आत्मविश्वास भी विकसित होता है। अपने दृष्टिकोण को तार्किक ढंग से साबित करना चाहिए। वाद विवाद प्रतियोगिताओं से आपके अंदर समझने की शक्ति बढ़ेगी। हमें गहन अध्ययन पर फोकस करना चाहिए। वाद विवाद प्रतियोगिता में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए विषय की स्पष्टता आवश्यकता है। प्रो निशा सिंह ने डिबेट के विजयी प्रतिभाओं के नाम को घोषित किया। डिबेट के पक्ष में सुष्टि सिंह को प्रथम स्थान और विपक में अंशिका सिंह को प्रथम स्थान मिला।

बी .एड. द्वितीय वर्ष का शैक्षिक भ्रमण संपन्न

राणा प्रताप पी जी कॉलेज के बी एड द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने शैक्षिक भ्रमण के अंतर्गत नैमिषारण्य पंतनगर, हल्द्वानी रामनगर नैनीताल, नानकमत्ता, के सभी महत्वपूर्ण स्थलों का अध्ययन किया। महाविद्यालय के प्रबंधक बालचंद्र सिंह ने बताया कि शैक्षिक भ्रमण का मूल उद्देश्य छात्रों को वास्तविक परिस्थितियों से जोड़कर उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना है। प्राचार्य प्रो डी के त्रिपाठी ने बताया कि सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की सक्रिय भागीदारी के कारण अधिगम में बच्चों को प्रभावी ढंग से शामिल करने के लिए यह शैक्षिक भ्रमण प्रभावी उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह शैशिक भ्रमण मैडम शांतिलता कुमारी ,डॉ संतोष कुमार सिंह अंश, डॉ अभिषेक कुमार सिंह के निर्देशन में संपन्न हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ भारती सिंह ने बताया कि शैक्षिक भ्रमण के माध्यम से विद्यार्थी विविध प्रकार का अनुभव पाकर घटनाओं एवं वस्तुओं को। नई दृष्टि से सोचना सीख जाते है। मैडम शांतिलता कुमारी ने बताया कि क्षेत्र भ्रमण में छात्रों को वास्तविक परिस्थिति में ले जाकर विषय का व्यावहारिक तथा प्रत्यक्ष ज्ञान दिया जाता है। डॉ संतोष कुमार सिंह (अंश) ने बताया कि शैक्षिक यात्राएँ सीखने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा हैं।

शैक्षिक यात्राएँ छात्रों को एक अलग सेटिंग में सीखने और नए कौशल और रुचियाँ विकसित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करती हैं। इसलिए, शैक्षिक यात्राएँ प्रत्येक छात्र के शैक्षिक अनुभव का एक अभिन्न अंग होनी चाहिए। शैक्षिक भ्रमण में हम परोक्ष नहीं बल्कि प्रत्यक्ष रूप से देखते हैं, जिससे ज्ञान स्थायी होते हैं। यह मनोरंजन के माध्यम से सीखना शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम है।शैक्षिक यात्राएं छात्रों को नए अनुभवों और चुनौतियों से परिचित कराकर भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने में मदद कर सकती हैं। वे सीख सकते हैं कि अपरिचित परिस्थितियों के अनुकूल कैसे ढलें, अपनी भावनाओं को प्रबंधित करें और लचीलापन विकसित करें। विद्यार्थियों ने माना कि किताबों की दुनिया से बाहर निकलकर प्रत्यक्ष अनुभव करना अलग अनुभव रहा।इस टूर में सत्यम त्रिपाठी,अभिनव तिवारी,आलोक कुमार शर्मा ,महेश गौड़, प्रिंसू तिवारी, विशाल मौर्य, सद्दाम श्वेतम सिंह ,अमित तिवारी, अंशुमन शुक्ला, नौशाद ,विशाल रघुवंशी,सत्येंद्र शुक्ला, नवनीत, सचिन तिवारी,विजय वर्मा,अंकित यादव,आशुतोष सिंह,राम प्रकाश विशाल सिंह, बृजेश पाण्डेय, राजकुमार वर्मा,आस्था विजय तिवारी ,दिव्या सिंह, निष्ठा त्रिपाठी, अंतर गुप्ता, अंकित सिंह, दिव्यांशी श्रीवास्तव आदि विद्यार्थी शामिल रहे।

News & Events

संस्कृत विभाग ने आयोजित की एक दिवसीय कार्यशाला

पहले से स्थापित परम्परागत ज्ञान को जाँच परख कर उसमें नई सम्भावना तलाशना ही शोध है। ज्ञान में वृद्धि मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति है और यही उसे नवीन सत्य उद्घाटन के लिए प्रेरित करती है ।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. अमित तिवारी ने कहीं।

वह महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा शोध : अर्थ,उद्देश्य एवं प्रवृत्ति विषय पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे । असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. यशमन्त सिंह ने बताया कि शोध का शाब्दिक अर्थ है सुधारना,शुद्ध करना या शंकाओं का निराकरण करना। डॉ. नीतू सिंह ने शोध के विभिन्न आयामों पर विद्यार्थियों को जानकारी दी। असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. वीणा सिंह ने शोध के विषय, शीर्षक के चुनाव ,शोध सामग्री संकलन,उद्धरण और शोध संदर्भ के बारे विस्तार से बताया। कार्यशाला में संस्कृत विषय के शोधार्थी एवं परास्नातक द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थी शामिल हुए।

निर्मल वर्मा और उनका साहित्य विषय पर हिन्दी विभाग की संगोष्ठी

निर्मल वर्मा नई कहानी साहित्यिक आंदोलन के अग्रदूत थे। वे भारतीय चिंतन परम्परा के सशक्त लेखक हैं । हिंदी कहानी में आधुनिकता का बोध लाने वाले कहानीकारों में निर्मल वर्मा का नाम अग्रणी है।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ इन्द्रमणि कुमार ने कहीं।वह महाविद्यालय में हिन्दी विभाग द्वारा निर्मल वर्मा और उनका साहित्य विषय पर आयोजित संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे।

विशिष्ट वक्ता असिस्टेंट प्रोफेसर ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि ने कहा कि हम जब निर्मल वर्मा को पढ़ते हैं तो उनके साथ उनकी रचनाओं में सफर करने लगते हैं। रोजमर्रा की घटनाओं, मानवीय आदतों, कमियों खूबियों को उन्होंने उतने ही सहज रूप में लिखा है, जितना बाकी की दुनिया ने उसे कठिन बना रखा है। वे नैराश्य का आनंद लेने वाले रचनाकार हैं। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ रंजना पटेल ने कहा कि अपने जीवनकाल में साहित्य के लगभग सभी श्रेष्ठ सम्मान पाने वाले निर्मल वर्मा ने मानव समाज की पीड़ा को अपनी रचना के केंद्र में रखा । डॉ.विभा सिंह ने बताया कि उनके गद्य में प्रकृति का तरल और मार्मिक चित्रण दिखाई पड़ता है। संचालन डॉ.ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। स्नातकोत्तर व शोध विद्यार्थियों के लिए आयोजित इस संगोष्ठी में आकांक्षा सिंह,सौरभ , सात्विक व शिवांगी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

बहुआयामी औद्योगिक भ्रमण से लौटे वाणिज्य संकाय के विद्यार्थी

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का समूह तीन दिवसीय औद्योगिक भ्रमण कर अप्रैल के पहले हफ्ते में उत्तराखंड से वापस लौटा । इस दौरान छात्र छात्राओं ने पतंजलि के आयुर्वेदिक अस्पताल, परिधान, मेगा स्टोर, रिसर्च सेंटर, दाना पानी भोजनालय एवं शांतिकुंज के मेटल प्लांट का भ्रमण कर उद्योग जगत की बारिकियां समझीं। साथ गये संकायाध्यक्ष डॉ. विवेक सिंह असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ.रमाकांत तिवारी , डॉ.बृजेश प्रताप सिंह व यशस्वी प्रताप सिंह ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को हरिद्वार के टूरिस्ट स्थलों पर ले जाकर सेवा क्षेत्र के विभिन्न आयामों को समझाया । यहां विद्यार्थियों ने उत्तराखंड के अनेक प्रमुख लोगों से मुलाकात की । टूर से लौटी बीकाम की छात्राओं शिवांशी, अंजली, महक, कसक, पूनम, वैष्णवी, नेहा, श्रद्धा, शिवांगी व नंदिनी ने बताया कि वर्तमान में अवध क्षेत्र में टूरिज्म का महत्व बढ़ रहा है इसलिए सीखने की दृष्टि से यह भ्रमण हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा। नमन, उज्ज्वल, लक्ष्मी, अभिजीत, कमल, विपिन, शिवाकांत, आकाश, अभय आदि छात्रों ने बताया कि शिक्षकों के निर्देशन में उद्योग जगत की बारिकियों को प्रत्यक्ष देखना एक यादगार अनुभव है।

बाल अपराधों के कारण संकट में है बचपन - प्रोफेसर एम पी सिंह

बचपन हमारे समाज की अनमोल धरोहर है। बाल अपराधों की बढ़ती संख्या ने इसे खतरे में डाल दिया है। पूरा विश्व इस विषय पर चिंचित है।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर एम पी सिंह ने कहीं । वह महाविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग द्वारा 'बाल अपराध : समस्या कारण और निवारण' विषय पर आयोजित संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे। असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अखिलेश कुमार सिंह ने कहा कि बाल अपराधों के पीछे कई कारण हो सकते हैं। इनके समाधान के लिए समाज को साझा जिम्मेदारी निभानी चाहिए। बृजेश कुमार सिंह ने बताया कि शिक्षा का प्रसार , सामाजिक सहयोग व कानूनी प्रणाली को मजबूत करके इस समस्या को कम किया जा सकता है। डॉ.शालिनी सिंह ने कहा कि बच्चों की सुरक्षा और उनके सम्पूर्ण विकास हेतु समाज को व्यापक दृष्टिकोण बनाने की जरूरत है। डॉ.बृजेश सिंह ने विचार रखा कि बाल हित में परिवार शिक्षक और समाज एक साथ मिलकर काम करें तो धीरे-धीरे समस्या खत्म हो जायेगी। संचालन वीरेंद्र कुमार गुप्त ने किया । इस अवसर पर विभाग के सभी कक्षाओं के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

रक्षा अध्ययन विषय की संगोष्ठी आयोजित

चकमा युद्ध का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। यह सफलता की कुंजी और सैनिकों की विजय का रहस्य है।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के रक्षा अध्ययन विभागाध्यक्ष डॉ हीरालाल यादव ने कहीं। वह विभाग द्वारा वर्तमान परिदृश्य में युद्ध के सिद्धांतों की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे। बीए की छात्रा प्रीति ने कहा कि युद्ध का लक्ष्य चुनना और फिर उस पर मजबूती से जमे रहना युद्ध का एक बड़ा सिद्धांत है । अनुश्री सिंह ने बताया कि प्रतिशोध की भावना से फुफकारते हुए तड़ित के समान द्रुत और प्रबल आक्रमण करना ही प्रतिरक्षात्मक युद्ध का उज्ज्वल पक्ष है। शिवानी यादव ने युद्ध के सैन्य बल संकेंद्रण विषय पर अपने विचार व्यक्त किए । संगोष्ठी में सहबान अली ,राज यादव ,मोहम्मद अलफैज विद्यासागर , इंद्रजीत , पूजा वर्मा , प्रीति वर्मा , गरिमा सिंह , पुनीता , प्रीति विश्वकर्मा ,रंजन , नम्रता मिश्रा व अनामिका सिंह आदि विद्यार्थी मौजूद रहे ।

मृच्छकटिक नाटक स्वकालीन समाज का यथार्थ चित्रण है - डॉ.यशवन्त सिंह

' मृच्छकटिक नाटक अपने समय के सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करता है । इसके रचयिता शूद्रक ने समाज में व्याप्त अनेक बुराईयों और विसंगतियों के साथ राजतंत्र की कमियों को खुलकर उजागर किया है।' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. यशवन्त सिंह ने कहीं। वह महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा 'मृच्छकटिक में वर्णित सामाजिक स्थिति' विषय पर आयोजित विद्यार्थी संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. अमित तिवारी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि मृच्छकटिक संस्कृत साहित्य का एक यथार्थ प्रकरण है। समाज और व्यवस्था के वास्तविक स्वरूप को उद्घाटित करने का साहस दिखाने वाले शूद्रक आधुनिक साहित्यकारों के लिए प्रेरक और मार्गदर्शक हैं।

असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. नीतू सिंह ने बताया कि मृच्छकटिक समाज के सभी वर्गों की नारियों का प्रतिनिधित्व करता दिखाई देता है। संगोष्ठी में रूमा,गरिमा, निशा, संध्या ,विंदू, खुशबू, श्वेता आदि परास्नातक की छात्राओं ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। इस अवसर पर संस्कृत विभाग के सभी विद्यार्थी , शोधार्थी व शिक्षक उपस्थित रहे।

अर्थशास्त्र विभाग की संगोष्ठी में विद्यार्थियों को बताये शोध प्रस्ताव लिखने के तरीके

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग ने शोध प्रस्ताव कैसे लिखें विषय पर बारह अप्रैल को संगोष्ठी आयोजित की । संगोष्ठी में विद्यार्थियों को शोध प्रस्ताव लिखने के तरीके बताए गए।

अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ धीरेन्द्र कुमार ने कहा कि शोध समस्या का चयन,परिचय, उद्देश्य, परिकल्पना ,शोध प्रविधि , प्रतिदर्श डिजाइन , सीमाएं, साहित्य समीक्षा , निष्कर्ष एवं सुझाव आदि बिन्दुओं के आधार पर शोध प्रस्ताव तैयार किये जाते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों के समक्ष भारतीय कृषि क्षेत्र में उत्पादन की प्रवृत्तियां और ग्राम सर्वेक्षण विषय पर शोध प्रस्ताव तैयार करने का उदाहरण रखा । असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ सुनील कुमार त्रिपाठी ने शोध की आवश्यकता एवं उसके परिणामों को जनोन्मुखी बनाने पर चर्चा की। संगोष्ठी में अभिनव मिश्र, अपर्णा कसौधन , सिमरन , वीरेंद्र कुमार, देवानंद मिश्र,आयुष वर्मा,शुभम यादव , अंकित वर्मा, दीपशिखा,श्वेता व आनंद आदि विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए सवालों का समाधान किया गया।

जलियांवाला काण्ड शहीदों की स्मृति में आयोजित हुआ व्याख्यान

' जालियांवाला काण्ड भारत की आजादी के इतिहास में काली घटना के रूप में दर्ज है । इस घटना में अंग्रेजों की प्रताड़ना से जो वीर शहीद हो गए उन्हें नमन करते हुए हम प्रतिवर्ष श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। ' यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शैलेंद्र प्रताप सिंह ने कहीं।

वह तेरह अप्रैल को विभाग द्वारा शहीदों की स्मृति में आयोजित विद्यार्थी संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे। असिस्टेंट प्रोफेसर विनय कुमार विश्वकर्मा ने कहा कि आज आज़ाद भारत में हम जो साँस ले रहे है। वह उन्ही शहीदों की देन है। डॉ. प्रभात कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में शहीदों की यादों को संजोए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। जालियांवाला में बना स्मारक राष्ट्र की अमूल्य निधि है। डॉ .शिव भोले मिश्र ने बताया कि जालियांवाला की घटना से क्षुब्ध होकर रविन्द्र नाथ टैगोर ने नाईट हुड की उपाधि वापस कर दी थी । संगोष्ठी में इतिहास विभाग के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

जनसंख्या विस्फोट के कारण और प्रभाव पर भूगोल विभाग की संगोष्ठी

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के भूगोल विभाग ने पंद्रह अप्रैल को जनसंख्या विस्फोट : कारण और प्रभाव विषय पर एक छात्र संगोष्ठी की। संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ आलोक कुमार ने कहा कि जनसंख्या विस्फोट के कारण विश्व आज अनेकों समस्याओं से जूझ रहा है। भारत में भी बेरोजगारी और अपराध वृद्धि के मूल में यही है।

असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ . अभिषेक शुक्ला ने कहा कि कुछ सुरक्षात्मक उपाय और जन जागरूकता के माध्यम से जनसंख्या विस्फोट रोका जा सकता है। बीए द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा शिखा पांडे , निलेश कुमार गौतम और धर्मेंद्र ने अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण होने वाली समस्याओं और उसके रोकथाम के बारे में बताया। संगोष्ठी में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ शशांक शेखर सिंह एवं डॉ संतोष कुमार सिंह ने अपने विचार रखते हुए विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए सवालों का समाधान किया ।

कालेज में मिडटर्म परीक्षा सम्पन्न

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में स्नातक व परास्नातक कक्षाओं की मिड टर्म परीक्षा सकुशल सम्पन्न हो गई। इन परीक्षाओं में लगभग ढाई हजार स्नातक व सात सौ स्नातकोत्तर विद्यार्थी शामिल हुए। यह जानकारी देते हुए परीक्षा नियंत्रक डॉ धीरेन्द्र कुमार ने बताया कि बीए द्वितीय सेमेस्टर में लगभग 650 , चतुर्थ सेमेस्टर में लगभग 600 ,छठवें सेमेस्टर में लगभग 500 ,बीएससी द्वितीय सेमेस्टर में लगभग 130, चतुर्थ सेमेस्टर में 120 , छठवें सेमेस्टर में 90 तथा बीकाम द्वितीय सेमेस्टर में 80,चतुर्थ सेमेस्टर में 94 व छठवें सेमेस्टर में 87 विद्यार्थियों ने मिड टर्म परीक्षाएं दीं। वोकेशनल कोर्स कम्प्यूटर एप्लीकेशन की परीक्षा में स्नातक द्वितीय सेमेस्टर के 450 व चतुर्थ सेमेस्टर के 325 विद्यार्थी शामिल हुए। स्नातक मिडटर्म परीक्षाएं सोमवार 22 अप्रैल से शुरू हुई थीं जो शुक्रवार 26 अप्रैल तक चलीं। इसके बाद विभागीय स्तर पर परास्नातक की मिड टर्म परीक्षाएं आयोजित हुईं ।महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष एडवोकेट संजय सिंह, प्रबंधक एडवोकेट बालचंद्र सिंह व प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने मिड टर्म परीक्षा सकशल सम्पन्न होने पर परीक्षा समिति को शभकामनाएं दी हैं।

नूतन वर्ष अभिनंदन समारोह आयोजित

'विक्रम संवत की शुरुआत के समय मन अपने आप प्रसन्न हो जाता है। यह भारतीय नववर्ष हमारे जीवन में उल्लास और प्रगति का प्रतीक है। इस समय प्रकृति मानव की सहयोगी बनी रहती है। प्रकृति के साथ रहकर नववर्ष मनाने का अलग आनंद है ।'

यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने कहीं। वह प्राचीन इतिहास एवं पर्यटन विभाग द्वारा महाविद्यालय के संगोष्ठी कक्ष में आयोजित नूतन वर्ष अभिनंदन समारोह को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रहे थे। पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ राधेश्याम सिंह ने कहा कि नववर्ष का उत्सव मनाना हमारी प्राचीन परम्परा है। आभार ज्ञापन प्राचीन इतिहास विभागाध्यक्ष प्रोफेसर शैलेन्द्र प्रताप सिंह व संचालन डॉ प्रभात श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्नातक कक्षाओं में प्रवेश प्रारम्भ

राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सत्र 2024 - 25 के लिए बीए बीएससी और बी कॉम में प्रवेश शुरू हो गया है । प्राचार्य ने बताया कि प्रवेश हेतु कालेज काउंटर से प्रवेश फार्म लिया जा सकता है। विद्यार्थी चाहें तो कालेज की वेबसाइट से भी प्रवेश फार्म डाउनलोड कर सकते हैं। प्रवेश हेतु यूनिक आईडी का होना जरूरी है जो किसी भी कम्प्यूटर से निकलवाई जा सकती है। इसके साथ आधार कार्ड , अंकपत्र, प्रमाण पत्र व फोटो आदि भी लगते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया बड़ी ही सहज और सरल है । विद्यार्थी या अभिभावक किसी भी कार्य दिवस में महाविद्यालय आकर अन्य जानकारी ले सकते हैं।

GLIMPSE OF COLLEGE